MT

Seat No. | | | | | | | |

2018 1100

MT - HINDI (COMPOSITE) (SECOND OR THIRD LANGUAGE) (H) - SEMI PRELIM - II - PAPER - II

Time : 2 Hours **Preliminary Model Answer Paper** **Max. Marks : 50**

विभाग 1 : गद्य

उ.1. **(क) निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर सूचनानुसार निम्नलिखित कृतियाँ पूर्ण कीजिए ।** **(6)**

1) आकलन कृति

i) **संजाल पूर्ण कीजिए।** **1**

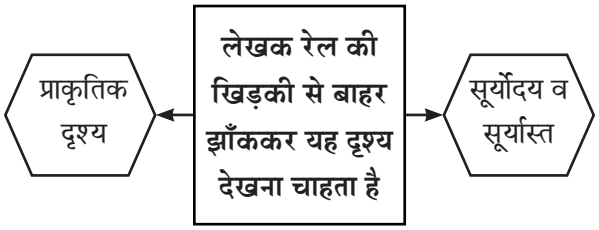

ii) **कृति पूर्ण कीजिए।** **½**

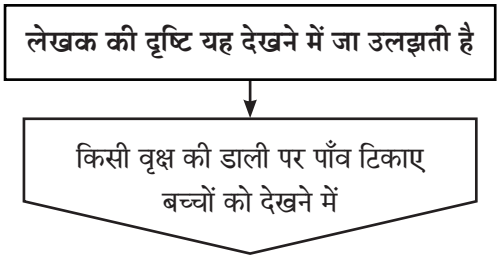

iii) **निम्नलिखित असत्य विधान को सत्य करके लिखिए।** **½**

लेखक को भागते वृक्षों का साथ निभाने में बड़ा मजा आता था।

2) शब्द संपदा

i) **अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए।** **1**

(1) प्रकृति से संबंधित - **प्राकृतिक**

(2) मन को लुभाने वाला - **मनोरम**

ii) **निम्नलिखित शब्दों के समोच्चारित भिन्नार्थक शब्द लिखिए।** **1**

(1) साथ - **सात** (2) गिर - **घिर**

3) स्वमत अभिव्यक्ति **2**

जी हाँ, मैंने रेल से कई बार यात्रा की है। गर्मियों की छुट्टियों का आनंद लूटने के लिए मैं अपने मामा जी के गाँव जोधपुर गया था। मैं अपनी माता जी के साथ मुंबई से निकला था। जब हम मुंबई रेल स्थानक पर पहुँचे, उस वक्त रेल्वे प्लेटफार्म पर काफी भीड़ थी। सब लोग इधर-उधर भाग-दौड़ कर रहे थे। प्लेटफार्म पर कई दुकानें थीं। हमने रास्ते में पढ़ने के लिए कुछ पत्रिकाएँ खरीद लीं। थोड़ी देर बाद जोधपुर जाने वाली रेल आ गई और हम उसमें बैठ गए। बीस मिनट के बाद रेल चल पड़ी। जैसे ही हम मुंबई से बाहर आए; वैसे ही दूर-दूर तक फैले हुए खेत और पर्वत देखकर हम आनंदविभोर हो गए। थोड़ी देर बाद घाटियाँ आई। रेल घाटियों से बहुत ही धीमी गति से जा रही थी। सर्वत्र शीतल हवा बह रही थी। वातावरण बड़ा ही खुशनुमा था। प्राकृतिक दृश्यों का मनोहारी रूप देखकर मेरा मन प्रफुल्लित हो गया। करीब चौदह घंटे रेल में बीताने के बाद हम जोधपुर पहुँच गए।

उ.1. (ख) निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर सूचनानुसार निम्नलिखित कृतियाँ पूर्ण कीजिए । **(6)**

1) आकलन कृति

कृति पूर्ण कीजिए। **2**

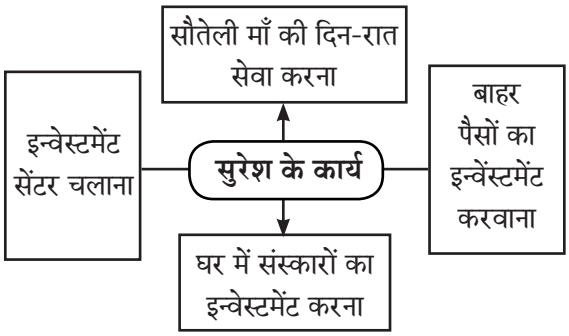

2) शब्द संपदा

i) **वचन बदलिए।** **1**

(1) बात - **बातें** (2) पैसा - **पैसे**

ii) (1) इन्वेस्टमेंट (2) सेंटर **1**

3) स्वमत अभिव्यक्ति **2**

हम संसार में जो कुछ करते हैं वह व्यवहार है। व्यवहार हमारे व्यक्तित्व को दर्शाता है। संस्कार सनातन होता है। व्यक्ति के हर रोज के व्यवहार में संस्कार के दर्शन होने चाहिए। जिस व्यक्ति के व्यवहार से संस्कार झलकते हैं, उसे सभी याद करते हैं। ऐसा व्यक्ति मृत्यु के बाद भी अमर हो जाता है। भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति एवं महान वैज्ञानिक डॉ. अब्दुल कलाम जी का भी सभी के साथ बहुत ही अच्छा व्यवहार था। उनके व्यवहार से सादगी एवं माधुर्य था। उनका जीवन व्यवहार एवं संस्कारों का ऐसा अद्‌वितीय मिश्रण था जिससे संपूर्ण दुनिया में वे प्रसिद्‌ध हुए। सभी के साथ प्रेम व शांति से पेश आना, दूसरों की मदद करने के लिए सदैव तत्पर रहना व दूसरों के दुख व दर्द को समझना; यह सबसे अच्छा व्यवहार है और इसी व्यवहार से व्यक्ति के संस्कार झलकते हैं।

विभाग 2 : पद्य

उ.2. (च) पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए : **1**

1) आकलन कृति

i) **कृति पूर्ण कीजिए।** **1**

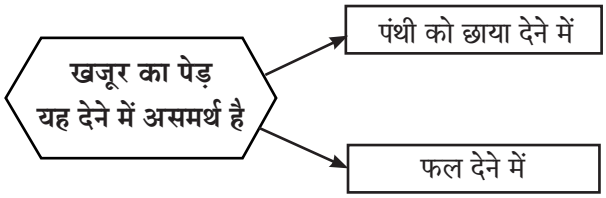

ii) **समझकर लिखिए।** **1**

(1) बड़ा व्यक्ति वही कहलाता है - **जिसके बड़े होने से दूसरों का भला होता है।**

(2) संसार में उन्हीं गुरु शिष्य को लोग याद करते हैं - **जो शिष्य अपने गुरु पर सर्वस्व अर्पण करने के लिए तैयार रहता है और जो गुरु अपने शिष्य से कुछ भी नहीं लेता है।**

2) शब्द संपदा

निम्नलिखित शब्द का लिंग बदलिए। **1**

(i) साधु - **साध्वी** (ii) शिष्य - **शिष्या**

3) स्वमत अभिव्यक्ति **2**

सत्संगति का अर्थ है - अच्छी संगति। अच्छे मनुष्यों के साथ रहने से हम सद्‌गति की ओर अग्रसर होते हैं। सत्संगति के संसर्ग से मनुष्य सदाचरण का पालन करता है। विद्‌यार्थियों को हमेशा अच्छे संस्कार वाले छात्रों की संगति में रहना चाहिए। सत्संगति हमें जीवन में आने वाली कठिनाइयों का सामना करने की शक्ति प्रदान करती है। सत्संगति में रहकर हम चरित्रवान बन सकते हैं। हमें जीवन में किसी से दोस्ती करते समय यह नहीं सोचना चाहिए कि वह गरीब है या अमीर। हमें दूसरे व्यक्ति के संस्कार एवं उसकी अच्छाइयों को ध्यान में रखते हुए उससे दोस्ती करनी चाहिए। सत्संगति में रहने से हम जीवन में कभी भी गलत रास्ते पर नहीं जा सकते हैं।

उ.2. (छ) पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1) आकलन कृति

i) **कृति पूर्ण कीजिए।** **2**

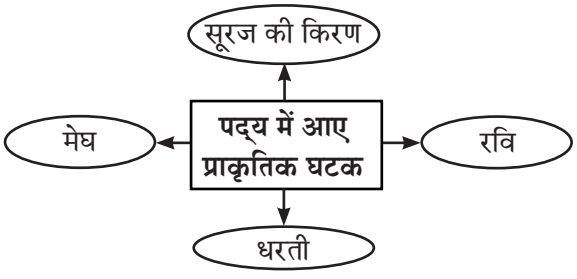

2) शब्द संपदा

निम्नलिखित शब्दों के अर्थ पद्यांश में से ढूँढ़कर लिखिए। **1**

(i) बादल - **मेघ** (ii) धरती - **धरा**

3) स्वमत अभिव्यक्ति **2**

समाज के कमजोर वर्गों के उत्थान और उनकी प्रगति हेतु हम विशिष्ट अभियान चला सकते हैं। उस अभियान के अंतर्गत हम दुर्बल घटकों में जागरूकता निर्माण करने का प्रयास करेंगे। ग्रामीण क्षेत्रों में इनकी संख्या अधिक होती है। अत: ग्रामीण क्षेत्रों का विकास करने हेतु हम अभियान चलाएँगे; ताकि सरकार ग्रामीण क्षेत्रों का विकास करने हेतु ठोस कदम उठाए। आज हमारे समाज में वंचित वर्गों को अच्छी शिक्षा नहीं मिल पा रही है। अत: उन्हें शिक्षा मिले इसके लिए हम प्रशासन का ध्यान उनकी ओर आकर्षित करने हेतु अभियान चलाएँगे। समाज में सामाजिक न्याय प्रस्थापित हो इसलिए व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर हम आपसी प्रेम, भाईचारा, मानवता आदि नीतियों का पालन करेंगे।

विभाग 3 : व्याकरण

उ.3. सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

1) निम्नलिखित शब्दों में से मानक वर्तनी के अनुसार शुद्ध शब्द छाँटकर लिखिए । **1**

i) चिह्न ii) इकट्ठा

2) निम्नलिखित अव्यय का वाक्य में प्रयोग कीजिए । **1**

धीरे-धीरे - गाड़ी **धीरे-धीरे** जा रही थी।

3) i) **काल परिवर्तन कीजिए ।** **1**

मुझे अभिवादन का ध्यान **आया था।**

ii) **काल पहचानिए ।** **1**

अपूर्ण वर्तमानकाल

4) i) **निम्नलिखित मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए ।** **1**

खाली हाथ लौटना - निराश होकर वापस आना।

वाक्य : लंदन गोलमेज परिषद किसी भी नतीजे पर नहीं पहुँच सका इसलिए गांधीजी को **खाली हाथ लौटना पड़ा।**

ii) **अधोरेखांकित वाक्यांश के लिए उचित मुहावरे का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए ।** **1**

अचानक पिता जी द्वारा पर्यटन पर जाने का निर्णय सुनकर बच्चे **फूले न समाए।**

5) i) **निम्नलिखित संधि विच्छेद की संधि कीजिए और भेद लिखिए।** **1**

संधि विच्छेद	संधि शब्द	संधि भेद
अंत: + चेतना	अंत:चेतना / अंतर्चेतना	विसर्ग संधि

ii) **निम्नलिखित शब्दों का विच्छेद कीजिए और भेद लिखिए।** **1**

शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
दिग्दर्शक	दिक् + दर्शक	व्यंजन संधि

6) i) **निम्नलिखित वाक्य का अर्थ के अनुसार भेद लिखिए।** **1**

कई दिनों तक मैं तुम्हारे चौके में नहीं गई। - **निषेधार्थक वाक्य**

ii) **सूचना के अनुसार वाक्य का प्रकार बदलिए ।** **1**

तुम मुझे अपने जन्म का समय और स्थान बताओ।

विभाग 4 : रचना

उ.**4.** **अ) 1) निम्नलिखित में से किसी एक पत्र का प्रारूप तैयार कीजिए ।** **4**

दिनांक : १५ जनवरी २०१७

प्रति,

सेवा में,

श्री थानाध्यक्षजी,

मालेगाँव।

विषय : अराजक तत्वों से सुरक्षा हेतु प्रार्थना।

महोदय,

शहर में कानून और व्यवस्था बनाए रखने की जिम्मेदारी आप पर है। हमें पूरा विश्वास है कि यह जिम्मेदारी निभाने में आपका पुलिस विभाग भरसक प्रयत्न करता ही होगा। फिर भी, पिछले कुछ दिनों से अराजक तत्वों की हरकतें बढ़ रही हैं। इस ओर आपका ध्यान खींचना मैं अपना नागरिक कर्तव्य समझती हूँ।

कुछ दिनों से औरतों के गले से चैन आदि खींचने और इन्हें अपमानित करने की वारदातों में वृद्धि हुई है। यह विशेष चिंता की बात है। औरतों की मदद करने के लिए आगे आनेवाले शरीफ आदमियों को गुंडों ने बेरहमी से पीटा है। यह तो और भी शर्मनाक बात है।

किसी-न-किसी बात को लेकर दो दलों में टकराव हो जाती है। फिर दुकानों की लुटपाट शुरू हो जाती है, जिसके बारे में स्वयं आप मुझसे अधिक जानते हैं।

आपसे विनम्र निवेदन है कि नागरिकों के कष्ट की ओर ध्यान देते हुए पुलिस-चौकियाँ बढ़ाई जाएँ और सिपाहियों को मुस्तैद रहने का हुक्म दिया जाए। इस दिशा में आप और भी आवश्यक कदम उठाने की कृपा करें। शीघ्र राहत मिलेगी तो जनता आपकी कृतज्ञ रहेगी।

धन्यवाद!

भवदीया,

हसीना सिद्दीकी

सिद्दीकी मंजिल,

मालेगाँव - ४२३ २०३।

ई-मेल आइडी - haseenas942@gmail.com

अथवा

दिनांक - २७ मई, २०१८

प्रिय मनोज

मधुर स्मृति!

बहुत-बहुत बधाई हो! मुझे अभी-अभी तुम्हारे मित्र मानव का टेलिफोन संदेश मिला। पता चला कि तुमने इस वर्ष नौंवी कक्षा में अपने विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। अगले वर्ष तुम्हारी बोर्ड की परीक्षा होनी है। आशा है, उसमें भी तुम अपने माता-पिता का नाम उज्ज्वल करोगे।

मनोज! मुझे इस समाचार से बहुत प्रसन्नता हुई है। मन में इतनी खुशी हुई कि सारे जरूरी काम छोड़कर तुम्हें बधाई-पत्र लिख रहा हूँ। मेरी ओर से हार्दिक बधाई। ईश्वर करें तुम दिन दुगुनी रात चौगुनी तरक्की करों। मम्मी-पापा भी तुम्हें आशीर्वाद दे रहे हैं।

पुन: बधाई के साथ।

तुम्हारा मित्र,

सुजल

नाम : सुजल सिंह

पता : अशोक नगर,

वी. पी. रोड,

नाशिक।

ई-मेल आईडी : sujal123@gmail.com

2) निम्नलिखित शब्दों के आधार पर कहानी लिखकर उसे उचित शीर्षक दीजिए ।
(लगभग ८० से १०० शब्द) **4**

कुसंगति का फल

एक जंगल था। उस जंगल में तरह-तरह के पक्षी एवं जानवर रहते थे। उस जंगल में एक बरगद के पेड़ पर एक हंस व एक कौआ भी रहता था। दोनों में गहरी मित्रता थी। एक दिन वे दोनों खुले आसमान में विचरण कर रहे थे। उस वक्त कौए की नजर सिर पर दधिपात्र लेकर जाने वाले एक ग्वाले पर गई। दधिपात्र देखकर कौए के मुँह में पानी भर आया। उसने तपाक से हंस से कहा, ''क्यों न हम दोनों मिलकर दधिपात्र से थोड़ा-थोड़ा दही खा लें।'' हंस ने कहा, ''नहीं भाई ! इस प्रकार चोरी या छिपकर खाने से आफत आ सकती है; हम पकड़े जा सकते हैं। फिर भी कौए ने हंस की एक न सुनी। वह जबरन हंस को घसीटकर दधिपात्र के पास ले आया। वह बड़े मजे से दही को खाने लगा। ढेर सारा दही देखकर वह अपनी चोंच नचा-नचाकर दही खाने लगा। हंस सिर्फ उसके साथ था, लेकिन उसने दही को छुआ तक नहीं। दधिपात्र लेकर जाने वाले ग्वाले को एहसास हुआ कि दधिपात्र में से कौआ या अन्य पक्षी दही खाने की चेष्टा कर रहे हैं। ग्वाले ने आव देखा न ताव तुरंत अपना दाहिना हाथ ऊपर कर उसने हंस को पकड़ लिया। तब तक आहट पाकर कौआ वहाँ से उड़ गया। बेचारा हंस! उसका बुरा हाल हुआ। ग्वाले ने उसे मार डाला।

सीख : बुरे लोगों के साथ रहने से बुरा होता है। इसलिए हमें अच्छे लोगों के साथ रहना चाहिए।

अथवा

निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर उस पर चार प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर एक-एक वाक्य में हो।

(i) अशांति का मूल कारण क्या है?

(ii) भय के वशीभूत मानव की स्थिति कैसी है?

(iii) मानव आणविक और आत्मिक दोनों शक्तियों का मिलन कैसे कराएगा?

(iv) शांतिमय दुनिया कैसे प्रत्यक्ष होगी?

उ.4. आ) निम्नलिखित जानकारी के आधार पर विज्ञापन तैयार कीजिए । (लगभग ५० से ६० शब्द) **4**

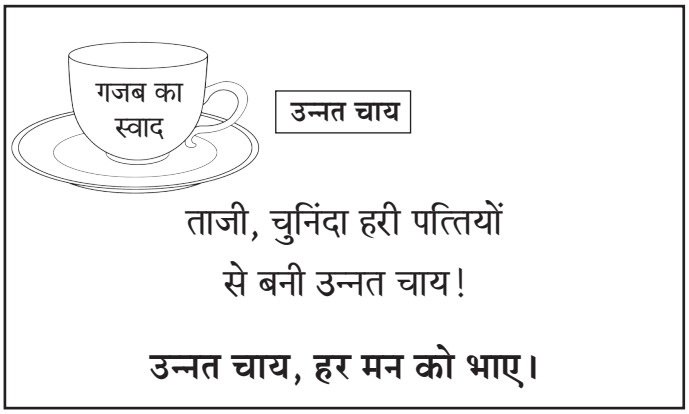

उ.4. इ) निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए । (लगभग ७० से ८० शब्द) **6**

1) **मेरा प्रिय त्योहार**

हमारा भारत देश त्योहारों का देश है। भारत में दीपावली, होली, नवरात्रि, गणेशचतुर्थी आदि तरह-तरह के त्योहार मनाए जाते हैं। प्रत्येक त्योहार की अपनी सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विशेषता होती है। इस प्रकार प्रत्येक त्योहार का अपना महत्त्व होता है। सभी को त्योहार अच्छे लगते हैं। मैं भी इसका अपवाद नहीं हूँ।

मेरा प्रिय त्योहार दीपावली है। इसे दीवाली भी कहते हैं। दीपावली दीपों का त्योहार है। यह त्योहार पाँच दिनों तक मनाया जाता है। धन त्रयोदशी, नरक चतुर्दशी, दीपावली, गोवर्धन पूजा और भैयादूज ये पाँच पर्व पाँच दिन मनाए जाते है। अमावस्या की अंधेरी रात जगमग दीपों से जममगाने लगती है। यह दृश्य बहुत ही मनोरम व अद्‌भुत होता है। इस दिन भगवान श्रीराम, माता सीता व भाई लक्ष्मण के साथ चौदह वर्ष का वनवास पूरा करके अयोध्या वापस पधारे थे। इसी कारण लोगों ने खुश होकर अपने घरों के द्‌वार पर भगवान के स्वागत हेतु दीप जलाए थे। तब से यह शुभ दिन दीपावली के रूप में मनाया जाता है। यह त्योहार बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। दीपावली की शाम को लोग देवी लक्ष्मी और गणेश जी की पूजा करते हैं। बच्चे पटाखे छोड़ते हैं। इस दिन लोग अपने परिवार वालों के पास जाकर उनसे मिलते हैं और खुशियाँ बाँटते हैं, एकदूसरे को मिठाइयाँ बाँटते हैं।

यह त्योहार शांति, भाईचारा व एकता का संदेश देता है। हमें एक-दूसरे के साथ प्रेम से रहना और एक-दूसरे के जीवन में खुशियाँ निर्माण करने का संदेश दीपावली से मिलता है। इसलिए हर्षित होकर मैं कहता हूँ -

''त्योहार है दीपावली का
सुख-समृद्धि और खुशहाली का।
बुराई के राक्षस को मन से भगाएँ
हृदय में शांति का दीपक जलाएँ।''

2) **वृक्ष लगाओ, देश बचाओ**

"वृक्ष हमारे सच्चे साथी,
हमको सबकुछ दे जाते हैं,
पर हम तो हैं बड़े स्वार्थी,
इनको काट गिराते हैं ।"

प्रकृति जीवनदायिनी है । उसी के द्वारा बनाए गए स्वस्थ वातावरण में साँस लेकर हम जी रहे हैं । प्रकृति में वृक्षों और वनों का बहुत महत्त्व है । वृक्ष प्रकृति के पूरक हैं । वृक्ष धरती के हाथ हैं। धरती माता अपने इन्हीं वृक्षरूपी हाथों के द्वारा अपने मानवपुत्रों को जल, वायु तथा सुंदर व शुद्ध वातावरण प्रदान करती है ।

वृक्ष प्रकृति द्वारा मनुष्यों को दिया गया वह बहुमूल्य उपहार है, जिसके लिए मनुष्य उसका सदा ऋणी रहेगा । वृक्ष से हमें ऐसी कई चीजें मिलती हैं, जिनका हम अपने दैनिक जीवन में उपयोग करते हैं । वृक्ष से लकड़ी, कोयला, गोंद तथा कागज आदि चीजें प्राप्त होती हैं । वृक्ष हमें शुद्ध हवा देते हैं तथा ग्रीष्म ऋतु की तेज धूप में छाया देते हैं ।

वृक्ष अत्यधिक मात्रा में ऑक्सिजन छोड़ते हैं । इसी ऑक्सिजन से हमारा जीवन चलता है । प्राण-वायु के स्त्रोत वृक्ष ही हैं । बढ़ती आबादी व शहरीकरण के इस युग में वृक्षों की उपयोगिता और भी बढ़ गई है । निरंतर बढ़ रहे प्रदूषण के कारण आज हमारी औसत आयु घटती जा रही है । हम रोज नई-नई बीमारियों के चंगुल में फँसते जा रहे हैं । वृक्ष ही इसका एकमात्र विकल्प हैं, जो बढ़ते प्रदूषण पर नियंत्रण कर हमें इन बीमारियों से बचा सकते हैं ।

वृक्ष जल के वेग को रोककर बाढ़-नियंत्रण करते हैं । वन-भूमि को मरुस्थल बनने से रोकते हैं । वे नमी को सोखकर धरती की निचली परत तक पहुँचा देते हैं । जिससे भूमि की उपजाऊ शक्ति बनी रहती है । वृक्षों के अभाव में धरती के ऊसर बनने का खतरा बना रहता है तथा साथ ही साथ प्रकृति का संतुलन भी बिगड़ने का खतरा बना रहता है । वृक्षों के कारण वन तथा वन के कारण वन्य पशु-पक्षियों का जीवन सुरक्षित रहता है । वृक्षों के कारण ही विभिन्न ऋतुओं का चक्र भी यथासमय चलता रहता है । चाहे कश्मीर की वादियाँ हों या शिमला की पहाड़ियाँ, ये सभी तरह-तरह के वृक्षों के कारण ही सुशोभित हैं । वृक्षों पर ही प्राकृतिक सौंदर्य निर्भर है । प्रात:काल सूर्योदय के समय वृक्षों पर तरह तरह के पक्षियों का चहचहाना

हमें धरती पर स्वर्ग की अनुभूति कराता है । यदि वृक्ष न हों तो संपूर्ण सृष्टि का विनाश निश्चित है । प्रकृति का संतुलन बिगड़ जाएगा । हमें न तो शुद्ध हवा मिलेगी और न ही स्वच्छ जल । रंगबिरंगे मीठे-मीठे फलों से हम वंचित हो जाएँगे । चारों तरफ मरुस्थल का दृश्य होगा । पशु-पक्षियों का आशियाना उजड़ जाएगा।

जिस प्रकार हम अपने परिवार को प्रेम करते हैं, उनकी खुशियों को महत्व देते हैं, उसी प्रकार हमें अपने देशरूपी परिवार के प्रति भी आत्मीयता रखनी चाहिए । वृक्ष हमारे देश व समाज की रक्षा करते हैं। वृक्ष हमारी प्राकृतिक संपदा हैं । वृक्षों को काटकर हम अपनी जीवनडोर काटते हैं । अपने देश की बहुमूल्य संपदा नष्ट करते हैं । यदि हम अपने देश की भलाई चाहते हैं तथा अपने आनेवाली पीढ़ी के प्रति चिंतित हैं और हमारे मन में उनके भविष्य के प्रति दूरदर्शिता है तो हमें वृक्षरूपी धन का संरक्षण करना चाहिए । वरना प्रकृति का विनाशक रूप हमारे देश को तबाह कर देगा । लगातार हो रही प्राकृतिक आपदाओं के माध्यम से प्रकृति हमें सचेत करने के लिए मानों यह चेतावनी दे रही है । –

"ओ पापी मानव ! क्यों पाप किए जाता है,
जिस आँचल ने तुझको पाला, उसे फाड़ता जाता है,
नहीं अभी यदि तू मानेगा, तो पीछे पछताएगा,
अपने ही हाथों से तू, अपनी चिता जलाएगा ।"

प्रकृति की यह चेतावनी हमें जल्द से जल्द समझ लेनी चाहिए तथा प्रकृति के आँचलरूपी वृक्ष की रक्षा कर हमें नित नए-नए वृक्ष लगाने चाहिए।

❖❖❖❖